- दूतकाव्यों में मेघदूत का स्थान क्या है, स्पष्ट करें।

कालिदास रचित मेघदूत संस्कृत गीतिकाव्यों का शिरोमणि है। इसमें एक यक्ष अपनी प्रियतमा के पास मेघ द्वारा सन्देश भेजता है। यक्ष एक वर्ष के लिए अभिशप्त होकर रामगिरि में निवास करता है जबकि उसकी पत्नी अपने विरह के दिनों को अलकापुरी में ही बिता रही है। वर्षाकाल के आरम्भ में मेघ को देखकर यक्ष अपनी व्याकुलता शब्दों में प्रकट करने लगता है। उसकी अभिव्यक्ति काव्यात्मक हो जाती है। वह चेतन-अचेतन का विचार छोड़कर मेघ से प्रार्थना करता है कि उसके सन्देश को अलकापुरी तक पहुँचा दे।

मेघदूत के दो खण्ड हैं। पूर्वमेघ में रामगिरि से अलकापुरी तक मेघ की भावी यात्रा का वर्णन है। इस प्रसंग में कवि ने रामगिरि, आम्रकूट, मालवक्षेत्र, रेवा नदी, दशार्ण देश, नीच पर्वत, उज्जयिनी, देवगिरि, दशपुर, कुरुक्षेत्र, हिमालय, कैलाश आदि स्थलों का हृदयावर्जक वर्णन किया है। मेघ की भौगोलिक यात्रा का मनोरम एवं काव्यमय वर्णन में कवि ने अपने भूगोलज्ञान का परिचय दिया है। उत्तरमेघ में अलका के वर्णन के साथ यक्ष के हृदयावर्जक सन्देश का वर्णन है।

मेघदूत की रचना मन्दाक्रान्ता छन्द में की गयी है जो विप्रलम्भ श्रृंगार के वर्णन में श्रेष्ठ छन्द माना गया है। क्षेमेन्द्र ने अपने सुवृत्त तिलक में इसकी प्रशंसा में कहा है — 'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति।' मेघदूत की प्रेरणा कालिदास को वाल्मीकीय रामायण से मिली थी। उन्हें वियोगी यक्ष की व्यथा के वर्णन में सीता हरण के दुःख से से व्यथित राम की पीड़ा का स्मरण हो आया है। कवि ने स्वयं मेघ की उपमा हनुमान से और यक्षपत्नी की समता सीता से की है — 'इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'। कालिदास ने हनुमान के स्थान पर मेघ को दूत बनाकर कवि सुलभ निरंकुशता का प्रदर्शन किया है। मेघ के माध्यम से उसने प्रकृति के प्रति चेतना में विश्वास प्रकट करके अपने हृदयगत भावों को स्थापित कर दिया है।

मेघदूत का प्रभाव परवर्ती संस्कृत कवियों पर तथा दूसरी भाषाओं के कवियों पर भी बहुत अधिक पड़ा है। पाश्चात्य कवियों में जर्मन कवि शीलर (1800ई0) ने अपनी गीति रचना 'मेरिया स्टुअर्ट' लिखी जिसमें स्कॉटलैण्ड की बन्दी रानी मेघ से प्रार्थना करती है कि वह फ्रांस की भूमि पर जाए जहाँ रानी ने अपनी युवावस्था बितायी है। यूरोप की अनेक भाषाओं में विगत क 200 वर्षों में इनके गद्यपद्यानुवाद हुए हैं। तिब्बती भाषा में 700 वर्ष पूर्व इसका अनुवाद हुआ था। चीनी, जापानी, रूसी आदि भाषाओं में भी इसके अनेक अनुवाद हुए हैं।

यदि हम संस्कृत काव्य-जगत् में देखें तो मेघदूत का व्यापक प्रभाव दिखायी पड़ेगा। संस्कृत में मेघदूत के दो प्रकार के प्रभाव दिखायी पड़ते हैं। कुछ लोगों ने इसके आकार का और कुछ ने इसकी विषयवस्तु का अनुकरण किया। आकार के अनुकरण में समस्या पूर्ति वाले काव्य आते हैं। जिनमें मेघदूत की एक या दो पंक्तियों का अपने श्लोकों में आवश्यक ग्रहण करके लोगों ने काव्य की रचना की। इस विधि से मेघदूत के श्लोकों की रक्षा भी हो गयी। ऐसे ही काव्यों में जिनसेन (814 ई०) रचित पार्श्वाभ्युदय काव्य है, जिसमें चार सर्ग हैं और जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवन चरित वर्णित है। इसके श्लोकों के अन्तिम चरण में मेघदूत की पंक्तियाँ क्रमशः दी गयी हैं। यह रचना मेघदूत के 120 श्लोकों को सुरक्षित रखे हुए है। इसी प्रकार एक अन्य कवि ने 'मेरुदूत' नामक काव्य की रचना की। जिसमें जैन साधु मेरुनाथ का जीवन वर्णित है। इस रचना में 125 श्लोक 'मेघदूत समस्या चरण' में अपने गुरु के पास मेघ द्वारा सन्देश भेजा है। इसमें देवपत्तन से औरंगाबाद (महाराष्ट्र) तक के मार्ग का रमणीय वर्णन है। इसमें मेघदूत के श्लोकों की केवल अन्तिम पंक्तियों का समस्यापूर्ति के रूप में प्रयोग किया गया है।

मेघदूत का अनुकरण विषय वस्तु की दृष्टि से प्रायः 50 दूतकाव्य में किया गया है। इनमें किसी चेतन या अचेतन के द्वारा प्रेम या ज्ञान या भक्ति का सन्देश भेजा गया है। ऐसी रचनाओं में हम घटकर्पर काव्य को सर्वप्रथम देखते हैं जिसमें केवल 22 श्लोकों में एक अनोढा स्त्री अपने पति के पास मेघ द्वारा संदेश भेजती है। इस काव्य में यमक अलंकार का बहुत अधिक प्रयोग है। कुछ लोग इसे कालिदास की रचना मानते हैं। मेघदूत का अनुकरण धोयी के पवनदूत में बहुत सफलता के साथ हुआ है। धोयी बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन (1170 ई०) की राजसभा में विद्यमान थे। पवनदूत में भी मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग है। इसमें 104 श्लोक हैं। दक्षिण की विजय यात्रा के क्रम में लक्ष्मण सेन को किसी गन्धर्व कन्या कुवलयवती ने देखा था। वही इसमें राजा के पास प्रेम सन्देश भेजती है। वेदान्त देशिक (1268-1369 ई०) ने हंस सन्देश की रचना की है, जिसमें हनुमान के लंका से लौटने पर रामसीता के पास हंस द्वारा अपना प्रणय संदेश भेजते हैं। प्रेम के साथ भक्ति का मिश्रण इस काव्य की विशिष्टता है।

प्रायः 1400 ई० में तीन दूतकाव्य लिखे गए - उद्धव कृत कोकिल सन्देश, उदयकृत मयूर संदेश और नागन भट्ट काव्य कृत हंस संदेश। रूप गोस्वामी (1500 ई०) ने जो चैतन्य महाप्रभु के शिष्य थे, दो दूतकाव्य लिखे हंसदूत और उद्धव संदेश। इनमें प्रेम के अपेक्षा भक्ति पक्ष पर बहुत बल दिया गया है। इसी प्रकार पूर्ण सरस्वती का हंस संदेश में कैली की एक स्त्री द्वारा भक्ति सन्देश

श्रीकृष्ण के पास वृन्दावन में भेजे जाने का वर्णन है। इसी प्रकार मोर सन्देश और भृंगदूत में भी कृष्ण भक्ति का वर्णन है। इन दूतकाव्यों में मन्दाक्रान्ता, मालिनी, वसन्ततिलका और शिखरिणी जैसे मनोरम छन्दों का प्रयोग किया गया है।

इस प्रसंग में रामशास्त्री कृत मेघ प्रति संदेश काव्य का भी वर्णन अपेक्षित है। इसमें दो सर्ग हैं और मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग हुआ है। इसमें मेघदूत की कथा को आगे बढ़ाया गया है। प्रथम सर्ग में यक्षिणि यक्ष के पास प्रति सन्देश भेजती है और द्वितीय सर्ग में अलका से लेकर रामेश्वर तक के मार्ग का वर्णन है। इस काव्य की रचना 19वीं शताब्दी के अन्त में हुई थी। इस प्रकार मेघदूत ने संस्कृत काव्य-जगत् में एक नयी काव्यधारा का प्रवर्तन किया जिसे दूतकाव्य कहते हैं।

दूतकाव्यों में मेघदूत का स्थान निश्चित रूप से श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें निर्मलता, प्रेम की उदात्तता और काम को प्रेम में बदलने की अद्भुत विषयवस्तु भी है जो यक्ष जाति भारतीय कथा में अपनी कामुकता के लिए प्रसिद्ध है और जिस यक्ष विशेष को इसी काम के कारण कुबेर का शाप मिला है वह मेघदूत में आत्मोत्सर्ग, विरह, व्याकुलता और परोपकार के भाव से भरकर आदर्श प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। मानव तो मानव वह अचेतन नदी तक की कृशता को दूर करने के लिए मेघ से प्रार्थना करता है—

"सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः ॥"

मेघदूत के अनुकरण पर लिखे गए प्रायः सभी काव्यों में भक्ति, संयम और प्रेम की त्रिवेणी बहती है। उनमें कहीं भी कामुकता के दर्शन नहीं होते। इसकी प्रेरणा देनेवाले मेघदूत में भी यही स्थिति है। यहाँ भी धर्म के स्थलों को अपने सही परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। जैसे मेघ से महाकाल मन्दिर में आरती के समय उपस्थित रहने को कहा गया है, कैलाश को भगवान शंकर के अट्टहास का मूर्त रूप दिया गया है तथा सरस्वती नदी के जल से शुद्धता प्राप्ति की बात कही गयी है। इसमें परोपकार पर भी बल दिया गया है। जैसे—

"अर्हस्येनं शमयितुमलं वारिधारासहस्रैः
आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् ॥"

इस प्रकार कवि ने धर्म, आचार और नीति के आधार पर विप्रलम्भ श्रृंगार का अभिव्यञ्जन मेघदूत में किया है जो परवर्ती कवियों को प्रेरित करता रहा है। इसमें कोरी कामुकता होती तो निश्चित रूप से इसके अनुकरण का साहस किसी को नहीं होता।

जिस कवि ने इसमें प्रेम देखा उसने प्रेम सन्देश पर दूत काव्य लिखा और जिसने भक्ति देखी उसने अपने को राम या कृष्ण की भक्ति में निमग्न करके उसके अनुरूप दूतकाव्य की रचना की। इसलिए मेघदूत एक समृद्ध काव्य धारा का प्रवर्तक होने के कारण अमर काव्य है। इसीलिए कहा गया है — 'मेघे माघे गतं वयः'। वस्तुतः यह अल्पकाय होते हुए भी सम्पूर्ण जीवन के लिए आनन्द का आश्रय ~~कोष~~ स्रोत है।